Advanced International Journal for Research (AIJFR)
E-ISSN: 3048-7641 ● Website: www.aijfr.com ● Email: editor@aijfr.com

प्राथमिक स्कूलों में कार्यरत शिक्षकों में मानव अधिकार जागरूकता का अध्ययन

डॉ दीपक जैन

सहायक प्रोफेसर, अध्यापक शिक्षा विभाग, डी. जे कॉलेज, बड़ौत (बागपत) उ.प्र

सारांश

मानव अधिकार जागरूकता समाज में समानता, न्याय और स्वतंत्रता सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा के क्षेत्र में, विशेष रूप से प्राथमिक स्तर पर, शिक्षकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। शिक्षक न केवल शैक्षिक ज्ञान प्रदान करते हैं, बल्कि बच्चों में सामाजिक और नैतिक जिम्मेदारियों के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने में भी सहायक होते हैं। यह अध्ययन बागपत जनपद के प्राथमिक स्कूलों में कार्यरत शिक्षकों में मानव अधिकार जागरूकता का स्तर जानने के उद्देश्य से किया गया। अध्ययन के लिए 100 शिक्षकों को चयनित किया गया। डेटा संग्रह के लिए लिकर्ट स्केल आधारित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि अधिकांश शिक्षक मानव अधिकारों के प्रति मध्यम से उच्च जागरूकता रखते हैं। शिक्षक की आयु, अनुभव और शिक्षा स्तर के अनुसार जागरूकता में भिन्नता पाई गई। अध्ययन से यह निष्कर्ष भी प्राप्त हुआ कि शिक्षक की मानव अधिकार जागरूकता उनके शिक्षण कार्य और छात्रों में जागरूकता उत्पन्न करने की क्षमता को प्रभावित करती है। अध्ययन से शिक्षा नीति निर्माताओं और स्कूल प्रशासन को शिक्षक प्रशिक्षण और जागरूकता कार्यक्रम विकसित करने में मार्गदर्शन प्राप्त होता है।

मुख्य शब्द – मानव अधिकार जागरूकता, प्राथमिक शिक्षक

प्रस्तावना

मानव अधिकार प्रत्येक व्यक्ति के जन्मजात अधिकार हैं। ये अधिकार जीवन, स्वतंत्रता, समानता, शिक्षा और सामाजिक न्याय सुनिश्चित करते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षक केवल ज्ञान के वाहक नहीं होते, बल्कि वे बच्चों में नैतिक और सामाजिक मूल्यों की स्थापना करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्राथमिक शिक्षा के स्तर पर शिक्षक बच्चों के मूल्यों, आदर्शों और अधिकारों की समझ को प्रभावित करते हैं। यदि शिक्षक स्वयं मानव अधिकारों के प्रति जागरूक हैं, तो वे बच्चों में भी समान जागरूकता उत्पन्न कर सकते हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि शिक्षक मानव अधिकारों के सिद्धांतों और महत्व के प्रति पूरी तरह से अवगत हों।

अध्ययन की आवश्यकता और महत्व

1. शिक्षक की भूमिका– शिक्षक छात्रों में सामाजिक और नैतिक जिम्मेदारी विकसित करने में महत्वपूर्ण हैं। उनकी जागरूकता सीधे छात्रों के व्यवहार और सोच पर प्रभाव डालती है।

2. मानव अधिकार शिक्षा– प्राथमिक स्तर पर मानव अधिकारों की शिक्षा बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण और समाज में न्यायपूर्ण व्यवहार के लिए आवश्यक है।

3. नीति निर्माण में योगदान– शिक्षक की जागरूकता का मूल्यांकन शिक्षा नीति और प्रशिक्षण कार्यक्रमों के विकास में सहायक है।

4. समानता और न्याय– शिक्षक के माध्यम से बच्चों में समानता, स्वतंत्रता और न्याय की भावना विकसित होती है।

5. समाज में सुधार– शिक्षक की जागरूकता से समाज में असमानताओं और भेदभाव को कम करने में सहायता मिलती है।

इस प्रकार, यह अध्ययन बागपत जनपद के प्राथमिक स्कूलों में कार्यरत शिक्षकों की मानव अधिकार जागरूकता को मापने और इसे सुधारने के लिए रणनीतियों का विकास करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

साहित्य समीक्षा

अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर किए गए अध्ययन यह स्पष्ट करते हैं कि शिक्षक समाज में मानव अधिकारों की जागरूकता फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वर्मा (2023) ने प्राथमिक शिक्षकों में मानव अधिकार जागरूकता और उनके नैतिक निर्णय लेने की क्षमता का विश्लेषण किया। शोध में पाया गया कि शिक्षक जिनके पास उच्च मानव अधिकार जागरूकता होती है, वे बच्चों को विवाद या असमानता के मामलों में बेहतर मार्गदर्शन प्रदान कर पाते हैं। यह अध्ययन इस बात को भी रेखांकित करता है कि शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में मानव अधिकार शिक्षा को शामिल करना आवश्यक है। सरोसिया (2022) ने मानव अधिकार शिक्षा और शिक्षक जागरूकता के बीच संबंध का अध्ययन किया। उनके निष्कर्ष बताते हैं कि सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि, शिक्षक का अनुभव और शिक्षा स्तर मानव अधिकार जागरूकता को प्रभावित करते हैं। विशेषकर, अनुभवी शिक्षक और उच्च शिक्षा प्राप्त शिक्षक मानव अधिकारों के प्रति अधिक संवेदनशील और जागरूक पाए गए। जैन (2021) ने डिजिटल शिक्षा के माध्यम से शिक्षक और छात्रों में मानव अधिकार जागरूकता पर अध्ययन किया। अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि डिजिटल साधनों और ऑनलाइन शिक्षण ने शिक्षक और छात्रों दोनों में मानव अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ाने में सहायक भूमिका निभाई। इसके साथ ही, शोध में यह भी पाया गया कि शिक्षक के प्रशिक्षण और सतत जागरूकता कार्यक्रम इस जागरूकता को और अधिक प्रभावी बना सकते हैं। गुप्ता एवं वर्मा (2020) ने भारत में प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में मानव अधिकार शिक्षा की उपलब्धता और प्रभाव का विश्लेषण किया। उनके निष्कर्षों से पता चला कि प्रशिक्षण कार्यक्रमों में मानव अधिकार शिक्षा का समावेश सीमित है, और इसके कारण शिक्षक की जागरूकता में असमानता पाई जाती है। उन्होंने सुझाव दिया कि नियमित कार्यशालाओं और सेमिनारों के माध्यम से शिक्षक जागरूकता को बढ़ाया जा सकता है। कौर (2019) ने शिक्षक की जागरूकता और उनके शिक्षण व्यवहार के बीच संबंध पर अध्ययन किया। उनके शोध में यह पाया गया कि जिन शिक्षकों की मानव अधिकार जागरूकता उच्च थी, वे छात्रों के साथ अधिक समावेशी और न्यायसंगत व्यवहार करते थे। यह शोध प्राथमिक स्तर पर शिक्षक की जागरूकता और बच्चों में अधिकारों की समझ के बीच प्रत्यक्ष संबंध को प्रमाणित करता है।शर्मा (2018) के अध्ययन में यह देखा गया कि शिक्षक की व्यक्तिगत मूल्य प्रणाली, उनके अनुभव और सामाजिक परिवेश मानव अधिकार जागरूकता पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं। विशेषकर, वे शिक्षक जो स्वयं सामाजिक न्याय और समानता के प्रति संवेदनशील हैं, बच्चों में भी समान मूल्य स्थापित कर पाते हैं।सिंह एवं कुमारी (2017) ने ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के प्राथमिक शिक्षकों में मानव अधिकार जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन किया। उनके निष्कर्षों से पता चला कि शहरी शिक्षक अधिक जागरूक पाए गए, जबकि ग्रामीण शिक्षक विभिन्न सामाजिक और आर्थिक चुनौतियों के कारण अपेक्षाकृत कम जागरूक थे। यह अध्ययन क्षेत्रीय असमानताओं और प्रशिक्षण कार्यक्रमों की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

इस प्रकार, समीक्षा साहित्य से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षक की मानव अधिकार जागरूकता कई कारकों–जैसे शिक्षा, अनुभव, सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि और प्रशिक्षण से प्रभावित होती है। साथ ही, यह जागरूकता सीधे छात्रों में मानव अधिकारों की समझ और उनके व्यवहार को प्रभावित करती है। विभिन्न शोधों ने यह भी पुष्टि की है कि नियमित प्रशिक्षण, कार्यशालाएं, डिजिटल शिक्षण और सकारात्मक सामाजिक परिवेश शिक्षक की जागरूकता बढ़ाने में प्रभावी हैं।

समस्या का विवरण

बागपत जनपद के प्राथमिक स्कूलों में कार्यरत शिक्षकों में मानव अधिकार जागरूकता का अध्ययन

उद्देश्य

1. बागपत जनपद के प्राथमिक स्कूलों में कार्यरत शिक्षकों में मानव अधिकार जागरूकता का स्तर मापन करना।

2. शिक्षक की आयु, लिंग, शिक्षा स्तर, अनुभव और कार्यक्षेत्र के आधार पर मानव अधिकार जागरूकता में अंतर का विश्लेषण करना।

3. शिक्षक की मानव अधिकार जागरूकता और उनके शिक्षण कार्य के बीच संबंध स्थापित करना।

4. शिक्षक प्रशिक्षण और कार्यशालाओं के प्रभाव को समझना और उनके मानव अधिकार जागरूकता स्तर पर प्रभाव का मूल्यांकन करना।

5. शिक्षा नीति और प्रशासन के लिए सुझाव देना कि कैसे शिक्षक की मानव अधिकार जागरूकता को बढ़ाया जा सकता है।

परिकल्पनाएँ

1. बागपत जनपद के प्राथमिक स्कूलों में कार्यरत शिक्षक मानव अधिकारों के प्रति मध्यम से उच्च जागरूकता रखते हैं।

2. शिक्षक की आयु, लिंग, शिक्षा स्तर और अनुभव के आधार पर मानव अधिकार जागरूकता में सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर होगा।

3. शिक्षक की मानव अधिकार जागरूकता और उनके शिक्षण कार्य के बीच सकारात्मक संबंध है।

4. शिक्षक प्रशिक्षण और सतत शिक्षा कार्यक्रम मानव अधिकार जागरूकता को सकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं।

5. ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के शिक्षक मानव अधिकार जागरूकता के स्तर में अंतर रखते हैं।

सीमाएँ एवं परिसीमन

1. यह अध्ययन केवल बागपत जनपद के प्राथमिक स्कूलों में कार्यरत शिक्षकों में मानव अधिकार जागरूकता तक सीमित है।

शोध पद्धति

1. शोध प्रकार

यह अध्ययन वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक प्रकार का है।

वर्णनात्मक दृष्टिकोण–शिक्षक की मानव अधिकार जागरूकता के स्तर का वर्णन।

विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण–आयु, लिंग, अनुभव, शिक्षा स्तर और कार्यक्षेत्र जैसे विभिन्न कारकों के आधार पर अंतर और संबंध का विश्लेषण।

2. नमूना

कुल शिक्षकरू 100 शिक्षक

स्कूलरू बागपत जनपद के 10 प्राथमिक स्कूल

चयन पद्धति – सरल यादृच्छिक

लिंग – पुरुष और महिला शिक्षक

आयु वर्ग – 25 से 55 वर्ष

अनुभव – 1 वर्ष से अधिक

3. उपकरण

प्रश्नावली तैयार की गई, जिसमें 30 वस्तुएँ शामिल हैं।

प्रत्येक वस्तु पर लिकर्ट स्केल (1 से 5) का प्रयोग किया गया

1 = बिल्कुल असहमत

2 = असहमत

3 = न तो सहमत, न ही असहमत

4 = सहमत

5 = बिल्कुल सहमत

प्रश्नावली में शिक्षक की मानव अधिकार जागरूकता, उनके अनुभव, प्रशिक्षण और शिक्षण व्यवहार का मूल्यांकन किया गया।

4. डेटा संग्रहण पद्धति

व्यक्तिगत साक्षात्कार और स्व–भरी हुई प्रश्नावली का उपयोग।

प्रत्येक शिक्षक को अध्ययन का उद्देश्य और गोपनीयता के बारे में बताया गया।

प्रश्नावली भरने के लिए शिक्षक को 30 मिनट का समय दिया गया।

5. डेटा विश्लेषण पद्धति

आंकड़ों का विश्लेषण सांख्यिकीय विधियों जैसे औसत , मानक विचलन , टी–परीक्षण से किया गया।

शिक्षक की आयु, लिंग, शिक्षा स्तर और अनुभव के आधार पर अंतर का परीक्षण।

शिक्षक की मानव अधिकार जागरूकता और शिक्षण कार्य के बीच संबंध का विश्लेषण सांख्यिकीय सहसंबंध विधि से किया गया।

6. शोध प्रक्रिया

1. शिक्षक चयन और पूर्व अनुमति प्राप्त करना।

2. प्रश्नावली का वितरण और डेटा संग्रह।

3. आंकड़ों का संकलन

4. सांख्यिकीय विधियों से डेटा का विश्लेषण।

5. परिणामों का निष्कर्ष और चर्चा।

परिणाम

इस अध्ययन में बागपत जनपद के प्राथमिक स्कूलों में कार्यरत 100 शिक्षकों के डेटा का विश्लेषण किया गया। परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि अधिकांश शिक्षक मानव अधिकारों के प्रति मध्यम से उच्च जागरूकता रखते हैं।

1. शिक्षक की मानव अधिकार जागरूकता का स्तर

औसत स्कोर – 3.8 (5 अंकों के स्केल पर)

स्तर वितरण

उच्च जागरूकता – 40 प्रतिशत

मध्यम जागरूकता – 50 प्रतिशत

निम्न जागरूकता – 10 प्रतिशत

2. आयु और जागरूकता

शिक्षकों की आयु वर्ग के अनुसार विश्लेषण से पता चला कि 31–40 वर्ष के शिक्षक सबसे अधिक जागरूक पाए गए। युवा शिक्षक (25–30 वर्ष) और वरिष्ठ शिक्षक (41–55 वर्ष) की जागरूकता क्रमशः मध्यम स्तर पर थी। टी–परीक्षण से यह अंतर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण (0.05 स्तर पर) पाया गया।

3. लिंग और जागरूकता

महिला शिक्षक औसत स्कोर – 3.9

पुरुष शिक्षक औसत स्कोर – 3.7

महिला शिक्षक अन्य समूहों की तुलना में थोड़ा अधिक जागरूक पाए गए।

4. शिक्षा स्तर और अनुभव

उच्च शिक्षा (स्नातकोत्तर और प्रमाण पत्र) वाले शिक्षक अधिक जागरूक पाए गए।

10 वर्ष से अधिक अनुभव वाले शिक्षक अपेक्षाकृत अधिक जागरूक थे।

5. प्रशिक्षण और कार्यशालाओं का प्रभाव

जिन शिक्षकों ने मानव अधिकार शिक्षा संबंधित प्रशिक्षण या कार्यशालाओं में भाग लिया था, उनका औसत स्कोर 4.1 था, जबकि जिन शिक्षकों ने नहीं लिया था, उनका स्कोर 3.5 था। यह परिणाम स्पष्ट करता है कि प्रशिक्षण शिक्षक की जागरूकता बढ़ाने में प्रभावी है।

6. तालिका

तालिका 1 – शिक्षक की आयु और मानव अधिकार जागरूकता

आयु वर्ग (वर्ष)	औसत स्कोर	मानक विचलन
25–30	3.6	0.5
31–40	4.0	0.4
41–55	3.7	0.5

तालिका 2 – प्रशिक्षण का प्रभाव

प्रशिक्षण प्राप्त किया	औसत स्कोर	मानक विचलन
हाँ	4.1	0.3
नहीं	3.5	0.5

चर्चा

अध्ययन के परिणाम यह पुष्टि करते हैं कि बागपत जनपद के प्राथमिक शिक्षक मानव अधिकारों के प्रति मध्यम से उच्च जागरूकता रखते हैं। यह शिक्षक की जागरूकता उनके शिक्षण कार्य और छात्रों के व्यवहार पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालती है। शिक्षक की आयु, लिंग और अनुभव के आधार पर अंतर स्पष्ट हुआ। 31–40 वर्ष के शिक्षक अधिक जागरूक पाए गए, क्योंकि वे अपनी शैक्षिक और व्यक्तिगत अनुभवों के माध्यम से मानव अधिकारों के महत्व को समझ चुके हैं। महिला शिक्षक की जागरूकता पुरुष शिक्षक की तुलना में थोड़ी अधिक थी, जो यह दर्शाता है कि सामाजिक संवेदनशीलता और सहानुभूति में अंतर जागरूकता को प्रभावित करता है। शिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण और कार्यशालाओं में भाग लेने से मानव अधिकार जागरूकता में स्पष्ट वृद्धि हुई। यह शोध गुप्ता एवं वर्मा (2020) के निष्कर्षों के अनुरूप है, जिन्होंने बताया कि शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में मानव अधिकार शिक्षा को शामिल करना जागरूकता बढ़ाने का सबसे प्रभावी माध्यम है। अनुभवी शिक्षक और उच्च शिक्षा प्राप्त शिक्षक अधिक जागरूक पाए गए, जबकि न्यूनतम अनुभव वाले शिक्षक मध्यम स्तर पर थे। यह अध्ययन यह भी दर्शाता है कि शिक्षक का व्यक्तिगत अनुभव और शिक्षा स्तर जागरूकता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस प्रकार, यह अध्ययन यह निष्कर्ष देता है कि शिक्षक की मानव अधिकार जागरूकता उनके शिक्षण कार्य और छात्रों में जागरूकता उत्पन्न करने की क्षमता को प्रभावित करती है। इससे यह स्पष्ट होता है कि प्राथमिक शिक्षा में शिक्षक प्रशिक्षण, कार्यशालाएं और सतत शिक्षा आवश्यक हैं, ताकि छात्र भी समानता, न्याय और स्वतंत्रता के सिद्धांतों के प्रति जागरूक हो सकें।

निष्कर्ष

अध्ययन के आधार पर निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं –

1. बागपत जनपद के प्राथमिक स्कूलों में कार्यरत अधिकांश शिक्षक मानव अधिकारों के प्रति मध्यम से उच्च जागरूकता रखते हैं।

2. शिक्षक की आयु, लिंग, शिक्षा स्तर और अनुभव मानव अधिकार जागरूकता को प्रभावित करते हैं। विशेष रूप से 31–40 वर्ष के शिक्षक और उच्च शिक्षा प्राप्त शिक्षक अधिक जागरूक पाए गए।

3. प्रशिक्षण और कार्यशालाओं में भाग लेने वाले शिक्षक अन्य शिक्षकों की तुलना में अधिक जागरूक थे। यह दर्शाता है कि सतत शिक्षा और प्रशिक्षण मानव अधिकार जागरूकता बढ़ाने का प्रभावी तरीका है।

4. महिला शिक्षक थोड़े अधिक जागरूक पाए गए, जो सामाजिक संवेदनशीलता और सहानुभूति के प्रभाव को दर्शाता है।

5. शिक्षक की जागरूकता सीधे उनके शिक्षण व्यवहार और छात्रों में जागरूकता उत्पन्न करने की क्षमता को प्रभावित करती है।

सिफारिशें

1. शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम – प्राथमिक स्तर के शिक्षक प्रशिक्षण में मानव अधिकार शिक्षा को अनिवार्य किया जाए।

2. सतत शिक्षा और कार्यशालाएं – शिक्षक नियमित कार्यशालाओं और सेमिनारों में भाग लें, जिससे उनकी जागरूकता बनी रहे।

3. डिजिटल संसाधनों का उपयोग – ऑनलाइन मंचों और डिजिटल टूल्स के माध्यम से मानव अधिकार जागरूकता को बढ़ावा दिया जाए।

4. शहरी और ग्रामीण क्षेत्र में संतुलन – ग्रामीण स्कूलों के शिक्षकों के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ, ताकि क्षेत्रीय असमानताओं को कम किया जा सके।

5. प्रशासनिक पहल – स्कूल प्रशासन और शिक्षा विभाग शिक्षक की जागरूकता बढ़ाने के लिए प्रोत्साहन और पुरस्कार प्रणाली लागू करें।

6. छात्र–केंद्रित पहल – शिक्षक बच्चों में मानव अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए परियोजनाएं, गतिविधियाँ और चर्चा सत्र आयोजित करें।

संदर्भ सूची

1. वर्मा, के. (2023). प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण में मानव अधिकार शिक्षा। मानसिक स्वास्थ्य और शिक्षा पत्रिका, 9(2), 28–45।
2. सरोसिया, ए. (2022). सामाजिक और आर्थिक कारक और शिक्षक जागरूकता। शैक्षिक मनोविज्ञान, 10(1), 7–19।
3. जैन, डी. (2021). डिजिटल शिक्षा और शिक्षक मानव अधिकार जागरूकता। भारतीय शिक्षा जर्नल, 7(4), 12–25।
4. गुप्ता, आर., एवं वर्मा, एम. (2020). शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में मानव अधिकार शिक्षा। शिक्षा और विकास, 11(2), 55–70।
5. कौर, जे. (2019). शिक्षक जागरूकता और शिक्षण व्यवहार का संबंध। शिक्षा अध्ययन पत्रिका, 5(3), 30–45।
6. शर्मा, एस. (2018). शिक्षक अनुभव और मानव अधिकार जागरूकता। शिक्षा शोध पत्र, 8(1), 15–28।
7. सिंह, आर., एवं कुमारी, पी. (2017). ग्रामीण और शहरी प्राथमिक शिक्षकों में मानव अधिकार जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन। भारतीय शिक्षा जर्नल, 12(2), 10–20।
8. वर्मा, ए. (2016). शिक्षक की आयु, लिंग और अनुभव का मानव अधिकार जागरूकता पर प्रभाव। शिक्षा और समाज, 9(1), 35–50।
9. शर्मा, आर. (2015). भारतीय प्राथमिक विद्यालयों में मानव अधिकार शिक्षा का प्रभाव। शैक्षिक मनोविज्ञान, 6(2), 18–32।